B.A - II — Paper - 302

01

Q1. सेतुबन्ध महाकाव्य में सीता का चरित्र का वर्णन करें।

Ans. सेतुबन्ध महाकाव्य के महान नायक भगवान श्रीराम हैं तथा नायिका सीता जी हैं। सम्पूर्ण सेतुबन्ध तथा रावण वध की प्रमुख घटनाओं का केन्द्र सीता जी हैं। यद्यपि इस महाकाव्य में सीता का उल्लेख एवं इनके चरित्र का विकास अनेकबार सामने नहीं आया है, फिर भी सीता की भावना से सारा महाकाव्य अनुप्राणित है, इस का कारण यह है कि काव्य की समस्त कार्य-योजना के उत्स में सीता प्रेरणा के रूप में विद्यमान हैं। सीता का चरित्र दिव्य एवं पूर्ण है। आदि कवि बाल्मीकि ने अपनी तप लेखनी के द्वारा जिस चरित्र का निर्माण किया है वह लोक वेद में परम्परा प्रथित एवं विश्व विश्रुत हो चुका है उस चरित्र में आगे फिर विकास के किसी नये चरण को जोड़ना किसी महाकवि के लिए एक दुष्कर व्यापार है, बाल्मीकि के बाद समय राम-साहित्य में भगवान श्रीराम एवं सीता जी के दिव्य चरित्र का विकास इसलिए अधिक नहीं हो सका है।

प्रवरसेन के इस सेतुबन्ध के समस्त कार्य-व्यापारों के केन्द्र में सीता जी विद्यमान हैं फिर भी सीता जी का चरित्र विकास कहीं अधिक नहीं हो पाया है।

सेतुबन्ध के प्रथम सर्ग में हमें सर्व प्रथम सीता के दर्शन होते हैं। वहाँ अशोक वाटिका में

बन्दिनी जनक-नन्दनी की विरह-वेदना तथा उनके मलिन स्वरूप की कल्पना हमारे सामने साकार हो जाती है। हनुमान के चिन्ता के कारण मलिनाम्बु विरहिणी सीता के वेणी-बन्धना में मुक्त होने के कारण मलाना सीता-वियोग के शोक से व्याकुल तथा उपवास करने के कारण स्वेद और कालिमा से निमग्न भी हाथ पर स्थित उन मणि ही राम के समान प्रस्तुत किया है। अशोक वाटिका में सीता की विरह-व्यवस्था से पूर्णत स्वरूप का चरित्र आदि कवि वाल्मीकि के चित्रण सीता वह उपवास करने के कारण अत्यन्त दुर्बल और दीन दिखायी देती थी तथा बारबार सिसकी रही थी प्रकरसेन ने सीता का चित्रण एक साधारण स्त्री के जैसा किया है। लंका दुर्ग पर वानरी सेना के कोलाहल को सुनकर अपने प्रिय के सामीप्य का अनुभव करती है सीता के बनावट तेज के बढ़कर उठ कर राम के साथ - आ जाता है। और वह मिलने के लिए व्याकुल हो जाती है। श्रीराम एवं लंका पति रावण के युद्ध होता है जिस में लंका पति रावण की मृत्यु हो जाती है और राम विजय हो जाते है। तब सीता को अपने साथ लेकर श्रीराम अयोध्या नगर में प्रयान कर जाते है यह सीता का चरित्र चित्रण बहुत मोहनी रहा है।